International Journal of Applied Research 2016; 2(1): 754-757

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(1): 754-757
www.allresearchjournal.com
Received: 25-11-2015
Accepted: 27-12-2015

डॉ0 संतोष गुप्ता
व्याख्याता–इतिहास, एम.एस.जे. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 संतोष गुप्ता
व्याख्याता–इतिहास, एम.एस.जे. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान, भारत

जैन संस्कृत पुराणों में नारी शिक्षा

डॉ0 संतोष गुप्ता

सारांश
पुराणों में शिक्षा के महत्व पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। शिक्षा से विभूषित होने पर जीवन सफल होने का भी उल्लेख पुराणों में मिलता है। नारी शिक्षा के संबंध में जैन संस्कृत पुराणों में यह भी उल्लेख मिलता है कि प्राचीन काल मे नारी को समुचित शिक्षा प्रदान की जाती थी। उस समय कन्याओं को विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षा प्रदान की जाती थी। उस समय शिक्षा लिखित तथा मौखिक दोनों ही रूपों में दी जाती थी। जैन संस्कृत पुराणों में नारी शिक्षा को चार भागों में बाँटा जा सकता है–व्यावहारिक शिक्षा, बौद्धिक शिक्षा, राजनीतिक शिक्षा एवं धार्मिक शिक्षा। जितनी प्रकार की शिक्षाएँ उस समय नारी जानती थी वैसी शायद आज दुर्लभ है।

मुख्य शब्द : जैन संस्कृत, नारी शिक्षा, शिक्षा, बौद्धिक शिक्षा, राजनीतिक शिक्षा

प्रस्तावना
आदर्श जीवनयापन के लिए बौद्धिक तथा भावात्मक विकास शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव हो पाता है। नारी शिक्षा के सम्बन्ध में जैन संस्कृत पुराणों से जो सूचना मिलती है, उसके आधार पर कहा जा सकता है कि प्राचीन काल में नारी को समुचित शिक्षा प्रदान की जाती थी। प्रत्येक बालिका को उसकी स्थिति के अनुरूप अवश्य शिक्षित किया जाता रहा होगा। पुराणों के परिशीलन से ज्ञात होता है कि नारी शिक्षा की मात्रा काफी चरम सीमा पर पहुँच गयी थी। उस समय कन्याओं को विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षा प्रदान की जाती थी। पुराणों में शिक्षा के महत्त्व पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। शिक्षा से विभूषित होने पर जन्म सफल होने का उल्लेख है। विद्यावती स्त्री सर्वश्रेष्ठ पद को प्राप्त करती थी। विद्या को मनुष्य की यशदात्री बताया है। अच्छी तरह से आराधना की गयी विद्या, देवताओं की ही भाँति सब तरह से मनोरथ को पूर्ण करने वाली है। विद्या ही मनुष्यों के सब मनोरथ को पूर्ण करने वाली कामधेनु है, विद्या ही चिन्तामणि है, विद्या ही धर्म, अर्थ तथा काम रूप फल से सहित सम्पदाओं की परम्परा उत्पन्न करती है। विद्या ही सब प्रयोजनों को सिद्ध करने वाली है।
पुराणों के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षा दोनों प्रकार से दी जाती रही होगी। इनमें हम लिखित तथा मौखिक दोनों प्रकार की शिक्षा का समावेश कर सकते हैं। एक स्थल पर उल्लेख मिलता है कि ऋषभदेव ने ब्राह्मी और सुन्दरी नामक दोनों कन्याओं का लिपि संस्कार किया था तथा एक स्वर्ण पट्ट पर अक्षर लिख कर दिये। एक स्थान पर चक्रपुर के राजा चक्रध्वज और उसकी मनस्विनी नामक स्त्री से उत्पन्न चित्तोत्सवा नामक कन्या का गुरु के घर जाकर खड़िया मिट्टी के टुकड़ों से वर्णमाला लिखने का कथन किया गया है।
जैन संस्कृत पुराणों में नारी शिक्षा के अनेक प्रकार उल्लिखित हैं। उस समय विभिन्न क्षेत्रों में प्रदान की जाने वाली नारी शिक्षा को चार भागों में बाँट सकते हैं–1. व्यावहारिक शिक्षा 2. बौद्धिक शिक्षा 3. राजनीतिक शिक्षा 4. धार्मिक शिक्षा

1. व्यावहारिक शिक्षा
पुराणों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि कन्याएँ गृह विज्ञान, ललित कला तथा पाकशास्त्र, पुष्पों की मालाएँ बनाना, सौंदर्य प्रसाधन तैयार करना, केश सज्जा आदि कार्य में दक्षता प्राप्त करती थीं। धनिक परिवारों में दासियाँ ही गृहकार्य करती थीं। संभवतः पुत्री अपने पितृगृह मे ही ये समस्त शिक्षाएँ ग्रहण कर लेती थीं जिससे पतिगृह में जाकर श्रेष्ठ पत्नी सिद्ध हो सके।

पाकशास्त्र की शिक्षा
कन्याओं को पाकशास्त्र की शिक्षा भी दी जाती थी। केकया को आस्वाद विज्ञान का ज्ञान था। भक्ष्य, भोज्य, पेय, लेह्य और चूष्य के भेद से भोजन सम्बन्धी पदार्थों के पाँच भेदों को जानती थीं।

1. **भक्ष्य–** जो स्वाद के लिए खाया जाता है, उसे भक्ष्य कहते हैं। यह कृत्रिम और अकृत्रिम के भेद से दो प्रकार का होता है।
2. **भोज्य–** जो क्षुधा निवृत्ति के लिए खाना खाया जाता है, उसे भोज्य कहते हैं। इसके भी मुख्य और साधक की अपेक्षा दो भेद हैं। ओदन रोटी आदि मुख्य भोज्य हैं और लप्सी, दाल, शाक आदि साधक भोज्य हैं।
3. **पेय**– शीतयोग जल मध के भेद से पेय तीन प्रकार का कहा गया है।
4. **लेह्य**– वे पदार्थ जिनको चाटकर आनन्द लिया जाता है।
5. **चूष्य**– वे पदार्थ जिनको चूसकर रस लिया जाता है। यह आस्वाद विज्ञान पाचन, छेदन, उछणत्वकरण तथा शीतत्वकरण आदि से सहित है। केकया को इन सबका सुन्दर ज्ञान था।

कढ़ाई–सिलाई व वस्त्र रंगने की शिक्षा

कढ़ाई–सिलाई, वस्त्रों को रंगों में रंगना आदि की शिक्षा दी जाती थी। केकया वस्त्र पर धागे से कढ़ाई का कार्य करना तथा वस्त्रों को अनेक रंग में रंगना इन कार्यों को वह बड़ी सुन्दरता और उत्कृष्टता के साथ जानती थी। हर्षचरित में भी पुष्प तथा पक्षी कढ़े हुए वस्त्रों का विवरण है जो निश्चित रूप से स्त्रियों के द्वारा ही बनाये जाते थे।

ललित कला की शिक्षा

ललित कला की शिक्षा में भी स्त्रियाँ बहुत आगे थीं। इस कला में नृत्य, संगीत, चित्रकला तथा मालाग्रंथन का विशेष स्थान था। उच्चकुलों में इस शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाता रहा होगा। वात्स्यायन ने राजकुमारियों को नृत्य, संगीत, वाद्ययंत्र, चित्रकलाओं का ज्ञान आदि को वांछनीय माना है।

नृत्यकला की शिक्षा

जैन पुराणों में नृत्य का अपना विशेष स्थान रहा है। स्वरूपा, तरुणी और सुन्दर पयोधर वाली नर्तकी श्रेष्ठ मानी गयी है। घर पर होने वाले उत्सवों आदि में स्त्रियाँ वाद्ययंत्रों के बीच नृत्य करती थीं। केकया नृत्यकला में पारंगत थी। वह

1. अंगहाराश्रय
2. अभिनयाश्रय
3. व्यायामिक को जानती थी तथा इनके अन्य अवान्तर भेदों को भलीभाँति जानती थी। इससे यह स्पष्ट होता है कि उस समय नृत्य की शिक्षा भी दी जाती रही होगी।

संगीत शिक्षा

जैन संस्कृत पुराणों से ज्ञात होता है कि उस समय संगीत की शिक्षा भी दी जाती थी। ऋषभदेव की ब्राह्मी और सुन्दरी दोनों कन्याएँ संगीत में पारंगत थीं। सोमा तथा विजयसेना गान्धर्व कला में परम सीमा को प्राप्त थीं। इसीलिए उनके पिता सुग्रीव ने अभिमानवश ऐसा विचार कर लिया कि जो इनको गान्धर्व विद्या में हरा देगा, वही इनका भर्ता होगा।

चारुदत्त की पुत्री गान्धर्वसेना संगीतशास्त्र में पारंगत थी। उसकी प्रतिज्ञा थी कि जो मुझे संगीतशास्त्र में पराजित करेगा, उसी के साथ शादी करूँगी।

केकया संगीत को अच्छी तरह जानती थी जो कण्ठ, शिर और धड़ इन तीनों स्थानों से अभिव्यक्त होता था तथा सात स्वरों से संवेत रहता था। षड़ज, ऋषभ, गान्धार, माध्यम, पंचम, धैवत, निषाद ये सात स्वर कहलाते हैं जो द्रुत, मध्य और विलम्बित इन तीनों लयों से सहित थे तथा आस्त्र और चतुरस्त्र इन ताल की दो योनियों को धारण करता था। स्थायी, संचारी, आरोही और अवरोही।

इन चार प्रकार के वर्णों से सहित होने के कारण जो चार प्रकार के पदों से स्थित था। प्रतिपदिक, तिडन्त, उपसर्ग और निपातों में संस्कार को प्राप्त संस्कृत, प्राकृत और शौरसेनी यह तीन प्रकार की भाषा जिसमें स्थित थी, धैवती, आर्षभी, षडज–षडज, उदीच्या, निषादनी, गान्धारी, षड़जकेकशी और षड़जमध्या ये आठ जातियाँ हैं अथवा गान्धारोदीच्या, मध्यम पंचमी, गान्धार पंचमी, रक्त गांधारी, मध्यमा, आन्ध्री, मध्यमोदीच्या, कर्माखी, नन्दिनी और कौशिकी ये दस जातियाँ हैं। जो संगीत इन आठ अथवा दस जातियों से युक्त था तथा इन्हें ही और आगे कहे जाने वाले तेरह अलंकारों से सहित था। प्रसन्नादि, प्रसन्नात, मध्यप्रसाद और प्रसन्नाध्वंसान ये चार स्थायी पद के अलंकार हैं। आरोही पद का प्रसन्नादि नामक एक ही अलंकार है और अवरोही पद के प्रसन्नान्त तथा कुहर ये दो अलंकार हैं। इस तरह तेरह अलंकार हैं। इन सब लक्षणों से सहित उत्तम संगीत को वह अच्छी तरह जानती थी।

वाद्ययंत्र विद्या

वाद्ययंत्रों को बजाने की शिक्षा भी लड़कियाँ प्राप्त करती थीं जब मरुदेवी गर्भवती थी तो दिक्कुमारियाँ देवियाँ उत्कृष्ट विज्ञान से सम्पन्न कितनी ही देवियाँ वीणा बजाकर उसका गुणगान करती थीं।

केकया भी वाद्य यंत्रों को बजाने में निपुण थी। वीणा से उत्पन्न होने वाला तत मृदंग से उत्पन्न होने वाला अवनद्ध, बाँसुरी से उत्पन्न होने वाली धुन, ये वाद्य हैं तथा इनके नाना भेद हैं। केकया इन सबको अच्छी तरह जानती थी। उससे समानता करने वाला विरला ही था।

चित्र विज्ञान की शिक्षा

पुराणों से अनेक ऐसे उदाहरण मिलते हैं जिससे स्पष्ट होता है कि चित्र विज्ञान की भी शिक्षा मिलती थी। ऋषभेदव की ब्राह्मी और सुन्दरी चित्रकला में पारंगत थी। मरुदेवी के चित्र विज्ञान की प्रशंसा की गयी है।

नाना शुष्क और वर्णित के भेद से शुष्क चित्र दो प्रकार का कहा गया है तथा चन्दनादि के द्रव्य से उत्पन्न होने वाला आर्द्रचित्र अनेक प्रकार का है। कृत्रिम और अकृत्रिम रंगों के द्वारा पृथ्वी, जल तथा वस्त्र आदि के ऊपर इसकी रचना होती है। यह अनेक रंगों के सम्बन्ध से युक्त होता था। केकया इस समस्त चित्रकला को जानती थी।

पुस्त कर्म शिक्षा

पुस्त कर्म कला के उल्लेख से पुस्त कर्म की शिक्षा का ज्ञान होता है। क्षय, उपचय और संक्रम के भेद से पुस्तकर्म तीन प्रकार का कहा गया है–

1. **क्षयजन्यः** लकड़ी को छीलकर खिलौने बनाये जाते थे, उसे क्षयजन्य पुस्त कर्म कहते हैं।
2. **संक्रमजन्यः** जो प्रतिबिम्ब अर्थात साँचे आदि गढ़ाकर बनाये जाते थे, उसे संक्रमजन्य पुस्तकर्म कहते हैं।
3. **उपचयजन्यः** ऊपर से मिट्टी आदि लगाकर जो खिलौना आदि बनाये जाते थे, उसे उपचयजन्य पुस्तकर्म कहते हैं।

यह पुस्तकर्म यन्त्र, निर्यन्त्र, सच्छिन्द्र तथा निरिछद्र आदि के भेदों से सहित है अर्थात् कोई खिलौना यन्त्र चालित होते हैं, कोई बिना यंत्र के होते हैं, कोई छिद्र सहित होते हैं, कोई छिद्र रहित। केकया इस कला को जानती थी। निश्चित रूप से केकया को पुस्तकर्म की शिक्षा प्रदान की गयी होगी। लोहा, दन्त, लाख, क्षार, पत्थर तथा सूत आदि से बनने वाले उपकरणों को बनाना जानती थीं।

मालाग्रंथन शिक्षा

उस समय माला ग्रंथन की शिक्षा भी दी जाती थी। पुराणों में ऐसे उल्लेख मिलते हैं जिनमें कन्या द्वारा यह घोषणा की गयी है कि जो उसे माला ग्रंथन में परास्त कर देगा, वह उसी के साथ विवाह करेगी।

आर्द्र, शुष्क, तदुन्युक्त और मिश्र के भेद से माला निर्माण की कला चार प्रकार की है–

1. **आर्द्रः** ताजे पुष्पों से जो माला बनायी जाती थी, उसे आर्द्र माला कहते हैं।
2. **शुष्कः** सूखे पत्र आदि से जो माला बनायी जाती थी, उसे शुष्क माला कहते हैं।
3. **तदुन्युक्तः** चावलों के साथ अथवा जवा से जो माला बनाई जाती थी, उसे तदुन्युक्त कहते हैं
4. **मिश्रः** जो उक्त तीनों प्रकार के मेल से बनायी जाती थीं, उसे मिश्र कहते हैं। केकया माला ग्रंथन की कला में पारंगत थी। यह माल्यकर्म रणप्रबोधन व्यूह संयोग आदि भेदों से सहित होता है।

सुगन्धित पदार्थ निर्माण

सुगन्धित पदार्थ निर्माण कला की शिक्षा का उल्लेख भी मिलता है। योनिद्रव्य, अधिष्ठान, रस, वीर्य, कल्पना, परिकर्म, गुणदोष विज्ञान तथा कौशल से गन्धयोजना अर्थात् सुगन्धित पदार्थ निर्माण कला के अंग हैं, जिनसे सुगन्धित पदार्थों का निर्माण होता है। ऐसे तगर आदि योनिद्रव्य हैं, कडुआ और खट्टा यह पाँच प्रकार का रस कहा गया है, जिसका सुगन्धित द्रव्य में खासकर निश्चय करना पड़ता है। पदार्थों की जो शीतलता और उष्णता है, वह दो प्रकार का वीर्य है। अनुकल–प्रतिकूल पदार्थों का मिलाना कल्पना है। तेल आदि पदार्थों का शोधना तथा धोना आदि परिकर्म कहलाता है। गुण अथवा दोष जानना गुण–दोष विज्ञान है। परकीय तथा स्वकीय वस्तु की विशिष्टता जानना कौशल है। यह गंधयोजना की कला स्वतन्त्र और अनुगत के भेद से सहित है।

वेषकौशल शिक्षा

वेषकौशल नामक कला का उल्लेख पुराणों में मिलता है। स्नान करना, शिर के बाल गूँथना तथा उन्हें सुगन्धित आदि करना यह शरीर संस्कार वेष कौशल नाम की कला है। केकया इस कला में निपुण थी।

संवाहन शिक्षा

संवाहन कला का भी पुराणों में उल्लेख मिलता है। यह दो प्रकार की है– उनमें से एक कर्मसंश्रया है और दूसरी शप्योपचारिका। त्वचा, मांस, अस्थि, मन इन चार को सुख पहुँचाने के कारण कर्म संश्रया के चार भेद हैं अर्थात् किसी संवाहन से केवल त्वचा को सुख मिलता है और किसी से त्वचा, मांस को सुख मिलता है और किसी से त्वचा, मांस, हड्डी और मन को सुख मिलता है। इसके सिवाय इसके संपृष्ट, गृहीत, मुक्ति, मलित, आहत, मंगित, विद्ध, पीड़ित और भिन्न पीड़ित ये भेद भी हैं। ये ही नहीं मृदु, मध्य और प्रकृष्ट के भेद से तीन भेद और भी होते हैं। जिस संवाहन से केवल त्वचा को सुख मिलता है वह मृदु अथवा सुकुमार कहलाता है। जो त्वचा और मांस को सुख पहुँचाता है वह मध्यमका कहलाता है। जो त्वचा, मांस और हड्डी को सुख पहुँचाता है वह प्रकृष्ट कहलाता है। इसके साथ जब कोमल संगीत होता है तब वह मनः सुख संवाहन कहलाने लगता है।

पत्रच्छेद विद्या

पत्रच्छेद विद्या का भी उल्लेख पुराणों से मिलता है। केकया पत्रच्छेद की कला में पारंगत थी। पत्रच्छेद के तीन भेद हैं–बुष्किम, छिन्न, अच्छिन्न।

1. **बुष्किम**–सुई अथवा दन्त आदि के द्वारा जो बनाया जाता है, उसे बुष्किम कहते हैं।
2. **छिन्न–** जो कैंची से काटकर बनाया जाता है तथा जो अन्य अवयवों के सम्बन्ध से युक्त होता है, उसे छिन्न कहते हैं।
3. **अच्छिन्न** – जो कैंची आदि से काटकर बनाया जाता है और अन्य अवयवों के सम्बन्ध से रहित होता है उसे अच्छिन्न कहते हैं। यह पत्रच्छेद क्रिया पत्र, वस्त्र तथा सुवर्णादि के ऊपर की जाती है। यह स्थिर तथा चंचल दोनों प्रकार की होती है।

2. बौद्धिक शिक्षा

बौद्धिक शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न नारियाँ पारंगत थीं। ब्राह्मी और सुन्दरी अक्षर और शास्त्र विज्ञान में पारंगत थी। मरुदेवी, अक्षरविज्ञान, गणित विज्ञान और आगम विज्ञान में पारंगत थी। सोमशर्मा की भद्रा और सुलसा नामक पुत्रियाँ वेद, व्याकरण आदि शास्त्रों में पारंगत थीं। ब्राह्मण सोमश्री वेदशास्त्र में निपुण कहा गया है।

उस समय लिपिज्ञान की शिक्षा दी जाती थी। केकया को लिपि ज्ञान था। उस समय की उक्त लिपियाँ प्रचलित थीं–

1. **अनुवृत** – जो लिपि अपने देश में आमतौर पर चलती है, उसे अनुवृत कहते हैं।
2. **विकृत** – लोग अपने–अपने संकेतों द्वारा जिसकी कल्पना कर लेते हैं, उसे विकृत कहते हैं।
3. **सामयिक लिपि** – प्रत्यंग आदि वर्णों में जिसका प्रयोग होता है, उसे सामयिक कहते हैं।
4. **नैमित्तिक लिपि** – वर्णों के बदले पुष्पादि पदार्थ रखकर जो लिपि का ज्ञान होता है, उसे नैमित्तिक कहते हैं।

इस लिपि के प्राच्य, मध्यम, यौधेय, समाद्र आदि देशों की अपेक्षा अनेक अवान्तर भेद होते हैं।

केकया लिपि ज्ञान को जानती थी। ऋषभदेव ने अपनी दोनों पुत्रियों–ब्राह्मी और सुन्दरी को अंग विद्या तथा लिपि ज्ञान की शिक्षा दी तथा स्वर्णपट्ट पर अक्षर लिखकर दिये।

उक्ति कौशल

उक्तिकौशल की विद्या का उल्लेख मिलता है। केकया उक्तिकौशल की विद्या में निपुण थी जिसके स्थान आदि की अपेक्षा अनेक भेद हैं ऐसी उक्ति कौशल नामक विद्या है। स्थान, स्वर, संस्कार, विन्यास, काकु, समुदाय, विराम, सामान्या–विहित, समानार्थत्व और भाषा ये जातियाँ कही गयी हैं। इनमें से उरःस्थल, कण्ठ और मूर्च्छा के भेद से स्थान तीन प्रकार का माना गया है। लक्षण और उद्देश्य अथवा लक्षणा और अभिधा की अपेक्षा संस्कार दो प्रकार का कहा गया है। पदवाक्य, महावाक्य आदि के विभागरहित जो कथन है, वह विन्यास कहलाता है। सापेक्ष और निरपेक्ष की अपेक्षा काकु दो भेदों से सहित हैं। गद्य–पद्य अर्थात् चम्पू की अपेक्षा समुदाय तीन प्रकार का कहा गया है। किसी विषय का संक्षेप में उल्लेख विराम कहलाता है। पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग करना सामान्यविहित कहा गया है। एक शब्द के द्वारा बहुत अर्थ का प्रतिपादन करना समानार्थता है। आर्य लक्षण और म्लेच्छ के नियम से भाषा तीन प्रकार की कही गयी है। इनके सिवाय जिसका पदरूप व्यवहार होता है, उसे लेख कहते हैं। ये सब जातियाँ कहलाती हैं। व्यक्तवाक्, लोकवाक् और मार्गव्यवहार से मातृकाएँ कहलाती हैं। इन सब भेदों के अनेक भेद हैं। इन सबसे सहित जो भाषण चातुर्य है, उसे उक्तिकौशल कहते हैं।

चिकित्सा विज्ञान

स्त्रियाँ चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा भी लेती थीं। विशल्या के पास ऐसी चिकित्सा थी जिससे उसने लक्ष्मण की शक्ति को दूर किया। केकया मनुष्य, गौ, हाथी, घोड़ा आदि की चिकित्सा निदान को अच्छी तरह जानती थी। विमोहन की चिकित्सा तीन प्रकार की थी–

1. मायाकृत, 2. पीड़ा अथवा इन्द्रजाल कृत अथवा मंत्रकृत और 3. औषधि कृत की चिकित्सा केकया जानती थी। जन्तु विज्ञान अर्थात् जीव विज्ञान सभी को वह जानती थी।

लोकज्ञता का ज्ञान

आश्रित और आश्रय के भेद से लोक दो प्रकार का कहा गया है। इनमें जीव और अजीव तो आश्रित है तथा पृथ्वी आदि उनके आश्रय हैं। इसी लोक में जीव की नाना पर्यायों में उत्पत्ति हुई है, उसी में यह स्थिर रहा है तथा उसी में इसका नाश होता है, यह सब जानना लोकज्ञता है। यह लोकज्ञता प्राप्त होना कठिन है। पूर्वावर पर्वत, पृथ्वी, द्वीप, देश आदि भेदों में यह लोक स्वभाव से ही अवस्थित है। इसे भी नारियाँ जानती थी।

3. राजनीतिक शिक्षा

राज्य शासन में परामर्श एवं सहयोग के लिए नीतिशास्त्र का अनुशीलन आवश्यक होता है। इसलिए राजनीतिक शिक्षा भी शिक्षा का प्रमुख अंग थी। स्त्रियों को राजनीतिक शिक्षा भी दी जाती थी। वे उसमें रुचि भी लेती थीं। प्राचीनकाल से ही नारियाँ राजनीतिक क्षेत्र में अपना सक्रिय सहयोग देती आ रही हैं। काश्मीर के राजा क्षेमगुप्त की पत्नी दिद्दा ने अपने पति को शासन चलाने में मदद की थी।

जैन संस्कृत पुराणों में ऐसी नारियों का उल्लेख मिलता है जिन्होंने शत्रुओं को कुचल डाला। राजा नहुष अपनी सिंहिका नामक रानी को नगर में रखकर प्रतिकूल शत्रुओं को वश में करने के लिए उत्तर दिशा की ओर गया। इधर दक्षिण दिशा के राजा नहुष को दूरवर्ती जानकर उसकी अयोध्या नगरी को हथियाने के लिए शत्रु आ पहुँचे। वे राजा बहुत भारी सेना सहित थे, परन्तु अत्यन्त प्रतापिनी सिंहिका रानी ने उन सबको युद्ध में जीत लिया। इतना ही नहीं, वह एक विश्वासपात्र राजा को नगर की रक्षा के लिए नियुक्त कर युद्ध में जीते हुए सामन्तों के साथ शेष राजाओं को जीतने के लिए दक्षिण दिशा की ओर चल पड़ी। शस्त्र और शास्त्र दोनों में ही उसने अच्छा परिश्रम किया था। वह प्रतिकूल सामन्तों के अपने प्रताप से ही जीतकर विजयवाद से दिशाओं को पूर्ण करती हुई नगरी में वापिस आ गयी। इससे स्पष्ट होता है कि सिंहिका रानी ने निश्चित रूप से राजनीतिक शिक्षा प्राप्त की होगी।

केकया के स्वयंवर के बाद राजा दशरथ और अन्य राजाओं में युद्ध शुरू हो गया। उस समय केकया ने रथ के चालक सारथि को उतार दिया और स्वयं शीघ्र ही साहस के साथ चाबुक व घोड़ों की रास संभालकर युद्ध के मैदान में जा खड़ी हुई और दशरथ से बोली कि हे नाथ ! आज्ञा दीजिए किसके ऊपर रथ चलाऊँ। दशरथ ने कहा कि जिसके ऊपर यह चन्द्रमा के समान सफेद छत्र सुशोभित हो रहा है, इसी के सन्मुख रथ ले चलो। ऐसा कहते ही वह धीर वीरा ने जिस पर सफेद छत्र लग रहा था, तथा बड़ी भारी ध्वजा फहर रही थी, अपना रथ आगे बढ़ा दिया। उसने रथ का इस प्रकार संचालन किया कि सारे शत्रु धराशायी हो गये।

प्रीतिमती गतियुद्ध जानती थी। गतियुद्ध में वह श्रेष्ठ थी। इसको कोई भी पराजित नहीं कर सका। रुक्मिणी ने कृष्ण के साथ रथ युद्ध किया था। मरुदेवी की सेवा में ऐसी दिव्यकुमारियों का उल्लेख मिलता है जो भाला, सुवर्णछड़ी, दण्ड, तलवार आदि हाथ में लेकर पहरा देती थीं। निश्चित रूप से शास्त्र विद्या में निपुण होंगी।

उस समय युद्ध में विभिन्न प्रकार की विद्याएँ प्रचलित थीं। इनमें रोहिणी, गौरी और प्रज्ञप्ति विद्याएँ ऐसी थीं जिन्हें केवल स्त्रियाँ ही जानती थीं। कनकमाला इन विद्याओं में पारंगत थी। स्त्रियों द्वारा सेना संचालन के अनेक उल्लेख भी मिलते हैं। शासन में राजमाताओं का प्रभाव भी रहता था।

4. धार्मिक शिक्षा

पुराणों में ऐसी अनेक कन्याओं तथा स्त्रियों के उल्लेख मिलते हैं जो धर्म में दीक्षित हो आर्यिका बन जाती थीं। उस समय विभिन्न आर्यिकाओं जैसे चन्दन, राजमती, पद्मावती, श्रीमती आदि आर्यिकाओं के उल्लेख मिलते हैं। समय–समय पर इनके धर्म सम्बन्धी प्रवचन भी होते हैं। महामुनियों का सम्मान करती थी। धर्म को सुनती थी तथा धर्म को सुनकर आप्त आश्रम और पदार्थों का बार–बार चिन्तन करती हुई सम्यक दर्शन की शुद्धता को प्राप्त करती। अथान्तर फाल्गुन महीने की अष्टाहिका में भक्तिपूर्वक श्री जिनेन्द्रदेव की अष्टाहि की पूजा की विधिपूर्वक प्रतिमाओं की पूजा करने का भी उल्लेख मिलता है।

ब्राह्मी और सुन्दरी नामक दोनों कन्याएँ अनेक स्त्रियों के समूह के साथ आर्यिकाओं के गणिनी पद पर पहुँची।

कृष्ण की छोटी बहिन द्वारा व्रत, उपवास आदि तपों एवं प्रतिदिन पायी जाने वाली अनित्य आदि भावनाओं से जो विशुद्ध भावों को प्राप्त हुई, वह आर्यिकाओं के समूह में रहकर तपस्या करती रहती थी।

मुनिराजों की सभा में श्राविकाओं तथा आर्यिकाओं दोनों का उल्लेख मिलता है। श्राविकाएँ गृहस्थ धर्म में रहकर अपना धार्मिक जीवन व्यतीत करती थीं, जबकि आर्यिकाएँ कठोर जीवन व्यतीत करती थीं।

स्त्रियों को सर्वोच्च केवल ज्ञान की प्राप्ति का उल्लेख मिलता है। हिन्दू पुराणों के विपरीत नारी को जैन पुराणों में मोक्ष का अधिकारी बतलाया गया है। पुराणों में ऐसे उल्लेख मिलते हैं जहाँ धर्म का पालन नहीं करने पर मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती थी।

स्त्रियों को सम्यक्दर्शन, सम्यक् धर्म आदि की शिक्षा प्रदान की जाती थी। विभिन्न प्रकार के तप और व्रतों की शिक्षा संघ में आर्यिकाओं द्वारा श्राविका तथा अन्य नई आर्यिकाओं को दी जाती होगी। इस प्रकार उस समय धार्मिक शिक्षा प्राप्त कर नारी अपना जीवन सफल करती होंगी।

अन्य प्रकार की विद्याएँ

पुराणों में ऐसी अनेक विद्याओं का उल्लेख मिलता है जिन्हें नारी जानती थीं। सोमश्री का विवाह जब वासुदेव के साथ हो गया तो एक दिन सोती हुई सोमश्री को एक विद्याधर हर ले गया और विद्याधर की बहिन वेगवती सोमश्री का रूप धारण करके वासुदेव के साथ रहने लगी, ऐसा उल्लेख मिलता है।

एक कन्या का कुमार का वेष बनाकर शासन करने का भी उल्लेख मिलता है। एक दिन वासुदेव ने मदनवेगा से वेगवती कह दिया जिससे वह रुष्ट होकर अन्दर चली गयी। उसी समय त्रिशिखर विद्याधर की विधवा पत्नी शूर्पणखी, मदनवेगा का रूप धारण कर तथा अपनी प्रभा से महलों को एकदम प्रज्ज्वलित कर छल से वासुदेव को हर ले गयी।

पर्णलहवी विद्या

श्यामा की दासी श्यामल छाया इस विद्या को जानती थी। श्यामल छाया ने आकाश से गिरते हुए वासुदेव को पर्णलहवी विद्या के अधीन कर दिया जिससे वे पत्ते के समान लघु शरीर धारण कर पृथ्वी पर धीरे–धीरे आने लगे।

इस प्रकार उस समय नारी शिक्षा के क्षेत्र में बहुत आगे थी। जितनी प्रकार की शिक्षाएँ उस समय नारी जानती थी, वैसी शायद आज अज्ञात है। इनमें वेताल विद्या, पर्णलहवी जैसी विद्याओं का उल्लेख किया जा सकता है जिनको आज नारी नहीं जानती हैं।

संदर्भ

1. आदिपुराण
2. हरिवंशपुराण
3. पद्मपुराणः शास्त्री नेमिचन्द्र, आदिपुराण में प्रतिपादित भारत उत्तराध्ययन